ग्लोबल पब्लिक गुड्स

हमारे साझे भविष्य को पोषित करना

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के कई फायदे हैं। यह परोपकारी उद्देश्यों के लिए एक साधन के रूप में कार्य करता है। साथ ही, यह कई भू–राजनीतिक हितों की पूर्ति भी करता है। हालांकि, इससे देशों को अपने दीर्घकालिक राष्ट्रीय हितों से संबंधित साझा लक्ष्यों को प्राप्त करने में भी सहायता मिलती है। इनमें से कुछ लक्ष्य "ग्लोबल पब्लिक गुड्स" से जुड़े होते हैं। कोविड–19 महामारी, शरणार्थी संकट, जलवायु परिवर्तन, रूस–यूक्रेन युद्ध जैसी वैश्विक समस्याओं ने ग्लोबल पब्लिक गुड्स (Global Public Goods: GPGs) की आवश्यकता के महत्त्व को उजागर किया है।

इस डॉक्यूमेंट में हम चर्चा करेंगे कि:

1. ग्लोबल पब्लिक गुड्स (GPGs) क्या हैं? 2
   1.1. ग्लोबल पब्लिक गुड्स (GPGs) क्यों महत्वपूर्ण हैं? 3
2. पब्लिक गुड्स या GPGs की आपूर्ति कम क्यों बनी हुई है? 3
   2.1. पब्लिक गुड्स की सुविधा प्रदान करने में आने वाली सामान्य चुनौतियां क्या हैं? 3
   2.2. GPGs का उपयोग करने/ लाभ उठाने से संबंधित विशिष्ट चुनौतियां क्या हैं? 4
3. क्या GPGs को उपलब्ध कराने में सफलता हासिल कर पाना संभव है? 5
4. हम GPGs की आपूर्ति कैसे बढ़ा सकते हैं? 6
5. निष्कर्ष 7
6. टॉपिक एक नज़र में 8
7. बॉक्स और तालिकाएं 9

1. ग्लोबल पब्लिक गुड्स (GPGs) क्या हैं?

दरअसल ग्लोबल पब्लिक गुड्स ऐसे पब्लिक गुड्स को कहा जाता है जिनका दायरा **वैश्विक** हो। पब्लिक गुड्स को सार्वजनिक सुविधाओं, सेवाओं, अवसंरचनाओं, संस्थाओं, परिसंपत्तियों और संसाधनों आदि के रूप में समझा जा सकता है। अतः सरल शब्दों में पब्लिक गुड्स को हम सार्वजनिक सुविधाएं या वस्तुएं भी कह सकते हैं।

- **पब्लिक गुड्सः** ये बिना किसी भेदभाव के **सभी के लिए उपलब्ध** होती हैं। इनका उपयोग सभी लोगों द्वारा बार–बार किया जा सकता है। इससे अन्य लोगों को प्रदान करने वाली सेवाएं प्रभावित नहीं होती हैं। अतः लोग आपसी प्रतिस्पर्धा के बिना पब्लिक गुड्स का उपयोग कर सकते हैं।
- **पब्लिक गुड्स की विशिष्टताः** पब्लिक गुड्स से प्राप्त होने वाले लाभों की प्रकृति इनकों प्राइवेट गुड्स या क्लब गुड्स से अलग करती है। प्राइवेट गुड्स या क्लब गुड्स के लिए शुल्क का भुगतान करना पड़ता है। इसका अर्थ है कि पब्लिक गुड्स को किसी स्टोर से प्राप्त नहीं किया जा सकता है और न ही शुल्क मात्र का भुगतान करके उन्हें प्राप्त किया जा सकता है।
- **दायराः पब्लिक गुड्स** या सार्वजनिक वस्तुएं स्थानीय (लोकल), राष्ट्रीय (नेशनल) या वैश्विक (ग्लोबल) स्तर की हो सकती हैं। उदाहरण के लिए–
  - **लोकल पब्लिक गुड्सः** इसमें सार्वजनिक रूप से आतिशबाजी का प्रदर्शन करने का उदाहरण दिया गया है, क्योंकि कोई भी प्रत्यक्षदर्शी व्यक्ति इस आतिशबाजी का आनंद ले सकता है।

पब्लिक गुड्स

	प्रतिस्पर्धी (Rival)	गैर–प्रतिस्पर्धी (Non-rival)
निर्धारित लोगों के लिए उपलब्ध (Excludable)	**प्राइवेट गुड्स** खाद्य, औषधि, पुस्तकें	**क्लब गुड्स** टोल भुगतान वाली सड़कें, इंटरनेट, सिनेमा हॉल्स
सबके लिए उपलब्ध (Non-excludable)	**कॉमन गुड्स** प्राकृतिक संसाधन, न्यायिक व्यवस्था	**पब्लिक गुड्स** पर्यावरण, संस्कृति, तकनीक, लोक स्वास्थ्य

- **रीजनल पब्लिक गुड्सः** ये क्षेत्रीय सीमाओं के खुलेपन के कारण उत्पन्न होने वाली क्षेत्र–विशिष्ट सुभेद्यताओं से निपटने के लिए उपयोगी होती हैं। इसमें मानव और पशु रोगों के संचरण को नियंत्रित करने के लिए हस्तक्षेप करना भी शामिल है।
- **नेशनल पब्लिक गुड्सः** इसमें राष्ट्रीय रक्षा आदि को शामिल किया जाता है, क्योंकि इसका लाभ देश के सभी नागरिकों द्वारा उठाया जाता है।
- **ग्लोबल पब्लिक गुड्सः** इसमें प्राकृतिक पर्यावरण, संस्कृति, आपदा प्रबंधन, तकनीकी प्रगति आदि शामिल हैं, क्योंकि इनसे मिलने वाले लाभ विश्व के सभी नागरिकों को प्रभावित करते हैं।

बॉक्स 1.1. ग्लोबल कॉमन्स और ग्लोबल पब्लिक गुड्स

- आमतौर पर सभी मनुष्यों द्वारा साझा किए जाने वाले और सभी मनुष्यों को लाभ पहुंचाने वाले **प्राकृतिक या सांस्कृतिक संसाधनों** को ग्लोबल कॉमन्स कहते हैं। इनमें भूमि, महासागर और हिमावरण, बेहतर जलवायु और प्रचुर जैव विविधता, कार्बन एवं नाइट्रोजन चक्र आदि शामिल हैं।
- भू–राजनीति के दृष्टिकोण से, इनमें राष्ट्रीय क्षेत्राधिकार से परे पारंपरिक रूप से चार साझा क्षेत्र शामिल हैं– खुला समुद्र (High Sea), वायुमंडल, अंटार्कटिका और बाह्य अंतरिक्ष।

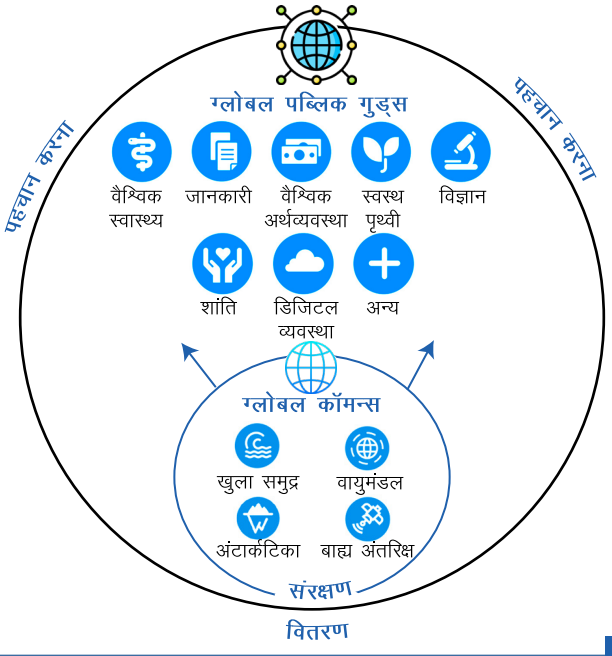

1.1. ग्लोबल पब्लिक गुड्स (GPGs) क्यों महत्वपूर्ण हैं?

GPGs वैश्विक आबादी के कल्याण के लिए महत्वपूर्ण घटक बनते जा रहे हैं और ये आधुनिक समाज के समक्ष आने वाली अलग–अलग चुनौतियों का समाधान करने में भी मदद कर रहे हैं।

- **साझा चुनौतियों का समाधान करने के लिए:** अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, प्रवासन और यात्रा के कारण बढ़ते आपसी जुड़ाव ने वैश्विक समुदाय के समक्ष **गंभीर साझा चुनौतियों** की संख्या में वृद्धि की है। उदाहरण के लिए– **सीमा पार से आतंकवाद का खतरा और महामारी के फैलने का जोखिम आदि।**
  - दीर्घावधि में इन जोखिमों से निपटने के लिए GPGs अनिवार्य हैं, क्योंकि राष्ट्रीय स्तर पर ऐसी जोखिमों से निपटने के प्रयास अपर्याप्त साबित हुए हैं।
- **असमान रूप से फैले वैश्विक जोखिमों से निपटने के लिए:** विकासशील देशों को असमान रूप से नुकसान पहुंचाने वाले वैश्विक जोखिमों (जैसे– जलवायु परिवर्तन) से निपटने के लिए GPGs एक आधारभूत घटक हैं। साथ ही, वैश्विक कार्बन ट्रेडिंग प्रणालियों जैसे उपायों को अपनाकर विशेष रूप से ऐसे देशों को लाभ पहुंचाने हेतु भी GPGs महत्वपूर्ण होते हैं।
- **गरीबी और असमानता में कमी करने के लिए:** समृद्ध और पिछड़े, दोनों प्रकार के देशों में संधारणीय प्रगति सुनिश्चित करने के लिए ग्लोबल पब्लिक गुड्स की उपलब्धता अनिवार्य है। साथ ही, ऐसे देशों में **गरीबी एवं असमानता को कम करने के लिए भी GPGs अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं।**
  - उदाहरण के लिए– राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर गरीबी उन्मूलन सुनिश्चित करने के लिए **सामूहिक खाद्य सुरक्षा** अनिवार्य है।
- **उत्कृष्ट निवेश:** GPGs का निर्माण करने के लिए दीर्घकालिक निवेश करना पड़ता है लेकिन इस निवेश का प्रतिफल बहु–आयामी और निरंतर प्राप्त होता है।
  - आंकड़ों के अनुसार, विकासशील देशों में अग्रिम चेतावनी प्रणालियों में 1 बिलियन डॉलर के निवेश से प्रति वर्ष 4 बिलियन डॉलर से लेकर 36 बिलियन डॉलर तक का लाभ प्राप्त होगा।
- **डिजिटल क्षेत्र में उभरते GPGs:** इनमें डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (DPI) और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) आदि शामिल हैं।
  - DPI **साझा डिजिटल एप्लिकेशन्स, सिस्टम्स और प्लेटफॉर्म्स** होते हैं, जिनका संचालन **इंटरऑपरेबल ओपन मानकों या स्पेसिफिकेशन्स** द्वारा होता है। उदाहरण के लिए– **इंडिया स्टैक**– भारत की मूल DPI है।
    - आधारभूत DPI में **विशिष्ट डिजिटल पहचान, भुगतान प्रणाली और डेटा एक्सचेंज लेयर आदि शामिल होते हैं।** इन आधारभूत DPI में अर्थव्यवस्था को रूपांतरित करने और समावेशी विकास को सक्षम करने की क्षमता हो सकती है।
  - **'सामाजिक भलाई के लिए AI'** के सिद्धांत का अर्थ है कि AI प्रौद्योगिकी का उपयोग समुदायों के कल्याण के लिए करना चाहिए।
    - इसमें एकल **व्यक्ति के बजाए समग्र रूप से समाज को लाभान्वित** करने पर केंद्रित AI एप्लिकेशन, डिजाइन और आकलन फ्रेमवर्क और नीतिगत पहलें शामिल होती हैं।

2. पब्लिक गुड्स या GPGs की आपूर्ति कम क्यों बनी हुई है?

2.1. पब्लिक गुड्स की सुविधा प्रदान करने में आने वाली सामान्य चुनौतियां क्या हैं?

पब्लिक गुड्स काफी महत्वपूर्ण होते हैं। इसके बावजूद, **प्राइवेट गुड्स की आपूर्ति की तुलना में** पब्लिक गुड्स का निर्माण करना **अधिक कठिन होता है।**

- **प्रोत्साहन की कमी:** लाभ की इच्छा रखने वाली संस्था को पब्लिक गुड्स की आपूर्ति से मिलने वाला अपेक्षित लाभ लागत से अधिक होना चाहिए, जो शायद ही कभी होता है।
- **फ्री राइडर की समस्या:** किसी भी व्यक्ति से पब्लिक गुड्स **के उपयोग के लिए शुल्क नहीं वसूला जा सकता है और** पब्लिक गुड्स के आपूर्तिकर्ता व्यक्तियों को इनका उपयोग करने से रोका नहीं जा सकता है। साथ ही, एक बार आपूर्ति हो जाने पर, सभी **लोग** पब्लिक गुड्स **का उपयोग कर सकते हैं, चाहे उन्होंने पब्लिक गुड्स को उपलब्ध करने में योगदान दिया हो या नहीं।**
- **बाह्यताएं** (Externalities): अधिकांश पब्लिक गुड्स के लिए, प्रत्येक व्यक्ति को होने वाला लाभ बहुत कम होता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु का उपयोग करता है तो उसका प्रभाव अन्य लोगों पर भी पड़ता है। यदि पब्लिक गुड्स का "स्पिलओवर" अर्थात "दूसरों पर पड़ने वाला प्रभाव" अधिक होगा, तो मूल उपयोगकर्ता को इसका कम लाभ मिलेगा। इसके विपरीत यदि "स्पिलओवर" कम होगा, तो मूल उपयोगकर्ता को इसका अधिक लाभ मिलेगा।
  - उदाहरण के लिए– हो सकता है कि **जलवायु परिवर्तन** को रोकने के लिए किए गए प्रयासों से कुछ देशों को बहुत कम लाभ हो लेकिन इसका स्पिलओवर प्रभाव द्वीपीय **देशों पर अत्यधिक सकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।**

- **लाभ प्राप्ति में विलंब:** कई पब्लिक गुड्स से **लाभों की प्राप्ति भविष्य में होती है, जबकि लागत को वर्तमान में वहन करना पड़ता है।** इसलिए लोग भविष्य की तुलना में वर्तमान को अधिक महत्व देते हैं। ऐसे में **दूरदर्शिता के अभाव से शिक्षा और प्राकृतिक वातावरण जैसे पब्लिक गुड्स पर किया जाने वाला निवेश और उससे मिलने वाले लाभ नकारात्मक रूप से प्रभावित हो सकते हैं।**

2.2. GPGs का उपयोग करने/लाभ उठाने से संबंधित विशिष्ट चुनौतियां क्या हैं?

GPGs के मामले में उपभोग की वैश्विक प्रकृति और इनकी आपूर्ति से संबंधित अनिवार्यताओं के कारण कुछ विशिष्ट चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

- **समन्वय का अभाव:** सरकारें (या उनके नागरिक) अक्सर वैश्विक हितों और राष्ट्रीय हितों के मध्य संतुलन स्थापित करने के पक्ष में नहीं होती हैं। इसके परिणामस्वरूप अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की संभावनाएं कमजोर होती हैं और अंतर्राष्ट्रीय समझौतों के संपन्न होने में बाधा आती है।
- **अलग-अलग वरीयताएं और प्राथमिकताएं:** GPGs जैसे समाधानों के मामले में सरकारों के अक्सर भिन्न-भिन्न अल्पकालिक हित होते हैं, भले ही वे समान दीर्घकालिक लक्ष्य साझा करते हों। इसके अलावा सरकारों के सीमित कार्यकाल के कारण **अल्पकालिक राजनीति, दीर्घकालिक दृष्टिकोण** पर भारी पड़ जाती है।
- **GPGs को लेकर भिन्न-भिन्न विचार:** ग्लोबल पब्लिक गुड्स में **"गुड्स"** क्या हों इस पर सर्वसम्मति नहीं बन पाती है। किसी देश या लोगों के समूह के लिए कोई पब्लिक गुड्स अत्यधिक अनिवार्य हो सकते हैं, जबकि वह दूसरे के लिए अनिवार्य नहीं।
  - उदाहरण के लिए- **GPG के रूप में मुक्त व्यापार व्यवस्था** को कुछ देशों द्वारा आवश्यक बताया गया है, जबकि कुछ देश इसे अपनी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं को देखते हुए स्वैच्छिक बताते हैं।
- **"सबसे कमजोर कड़ी" की समस्या:** कुछ GPGs को केवल तभी साकार किया जा सकता है जब **प्रत्येक सरकार** एक साझे दृष्टिकोण के साथ **पूरी तरह से सहयोग** करे। जैसे कि किसी संक्रामक रोग का उन्मूलन करने के लिए प्रयास किया जाना आवश्यक होता है।
  - **गैर-अनुपालन के एक भी कार्य से सफलता में बाधा उत्पन्न हो** सकती है। साथ ही, विफलता के उच्च जोखिम के कारण सरकारों को आवश्यक निवेश करने के लिए राजी करना कठिन हो जाता है।
- **कानूनी प्राधिकार का अभाव:** वैश्विक संस्थानों के पास अक्सर विनियमन और कराधान को लागू करने के लिए **कानूनी प्राधिकार का अभाव** रहा है। इसके अलावा, वैश्विक संस्थानों के पास दुनिया के सभी नागरिकों और सभी उम्र के नागरिकों की जरूरतों को पूरा करने हेतु संस्थागत क्षमता का अभाव होता है।
- **बहुपक्षवाद संबंधी चिंताएं:** कई विशेषज्ञों ने तर्क दिया है कि बहुपक्षवाद की वर्तमान संरचना GPGs की आपूर्ति करने में अपर्याप्त और अक्षम है।

बॉक्स 2.1. GPGs की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए मौजूदा बहुपक्षवाद में सुधार की आवश्यकता क्यों है?

- **नीति संबंधी चुनौतियां:** GPGs की प्रकृति वैश्विक होती है। इसलिए इन्हें घरेलू नीति या विदेशी मामलों जैसे किसी भी पारंपरिक नीतिगत फ्रेमवर्क में उचित रूप से कवर नहीं किया जा सकता है।
  - वैश्विक स्तर पर सार्वजनिक रूप से उपभोग करने और उपलब्ध होने के कारण **GPGs को लेकर देशों के मध्य नीतिगत परस्पर निर्भरता** अनिवार्य होती है। इस स्थिति में **संप्रभुता की धारणा** से संबंधित गैर-उल्लंघन योग्य राष्ट्रीय सीमाओं को लेकर टकराव उत्पन्न होता है।
- **लक्षित उद्देश्य से वित्त-पोषण:** सरकारों द्वारा सहायता (ODA) दानकर्ता **देशों के लिए विशेष चिंता के मुद्दों** पर अधिक केंद्रित होते जा रहे हैं।
  - GPG के वित्त-पोषण में **दानकर्ता के नजरिए की बजाय निवेश के नजरिए** (अर्थात लक्षित आबादी की आवश्यकताओं की पूर्ति करना) को आधार बनाने की आवश्यकता है।
- **वित्त-पोषण और निजी वित्त की कमी:** विकास हेतु वित-पोषण के लिए निजी वित्त पर निर्भरता बढ़ती जा रही है लेकिन इस तरह के वित्त-पोषण का स्तर अभी भी कम बना हुआ है।
- **वैश्विक शक्ति में बदलाव:** देशों ने सार्वभौमिक बहुपक्षवाद से पीछे हटना और G7, ब्रिक्स, SCO जैसे **मिनी-लेटरल मंचों** पर चयनित मुद्दों पर सहयोग करना शुरू कर दिया है।
- **किंडलबर्गर ट्रैप:** यह उस स्थिति को व्यक्त करता है जब कोई उभरती हुई शक्ति (जैसे चीन) अपने बढ़ते प्रभाव के बावजूद GPGs उपलब्ध कराने में विफल रहती है। इसके परिणामस्वरूप अस्थिरता उत्पन्न हो सकती है। यह 1930 के दशक के दौरान देखा गया था जब अमेरिका प्रमुख शक्ति के रूप में ब्रिटेन की जगह लेने के बाद GPGs प्रदान करने में विफल रहा था।

बॉक्स 2.2. एक छोटी सी वार्ता! कोविड–19 और ग्लोबल पब्लिक गुड्स (GPGs) की भूमिका

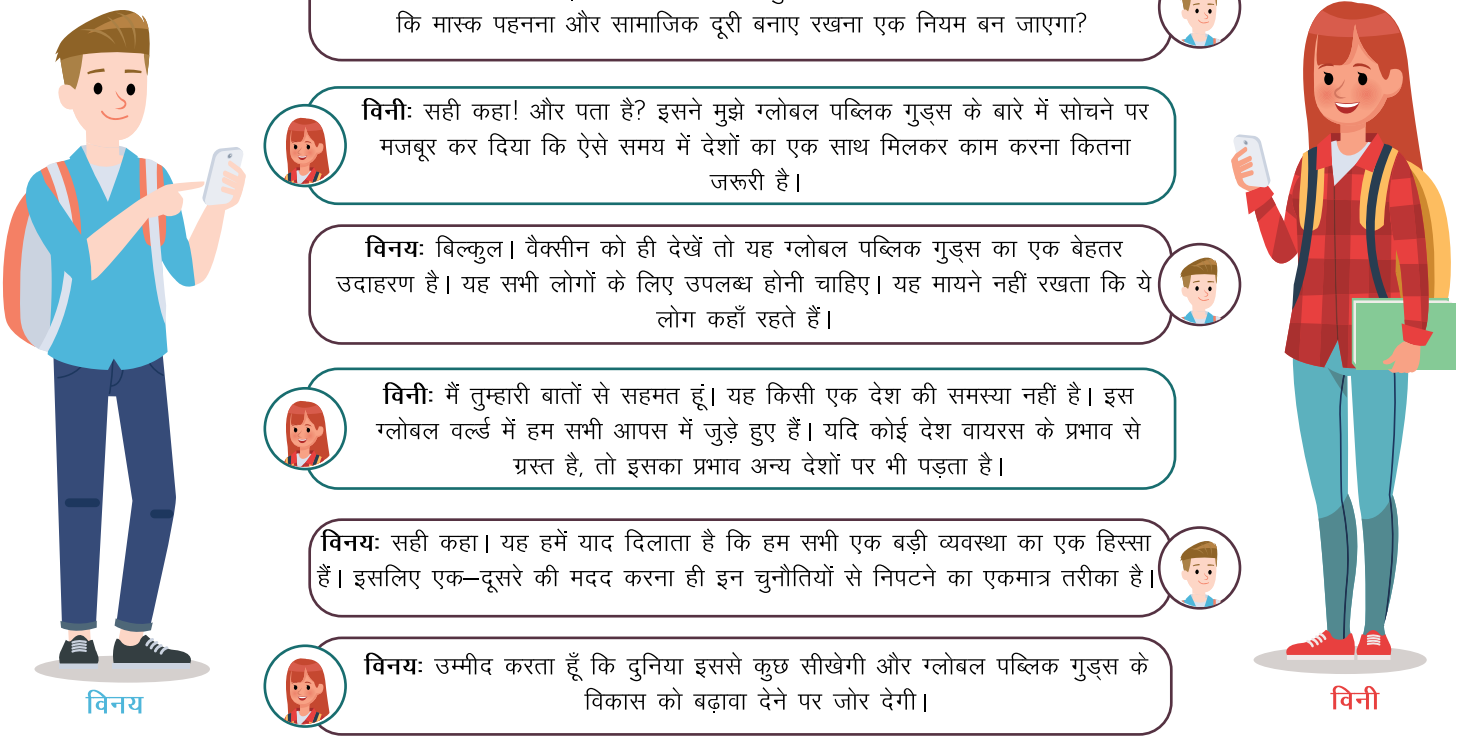

3. क्या GPGs को उपलब्ध कराने में सफलता हासिल कर पाना संभव है?

दुनिया में इससे पहले भी ऐसे कई सफल उदाहरण देखे गए हैं जब विशाल आबादी के लिए GPGs को उपलब्ध कराया गया। साथ ही, वैश्विक स्तर पर GPGs के विकास में आने वाली बाधाओं को भी दूर किया गया है।

- **पेरिस समझौता:** यह अंतर्राष्ट्रीय तालमेल के बेहतर उदाहरणों में से एक था, जिसे व्यापक रूप से अपनाया गया था। इसके तहत **देशों की अलग–अलग आवश्यकताओं और जिम्मेदारियों को ध्यान में रखते हुए उन्हें आर्थिक मदद** प्रदान करने का प्रावधान किया गया था। इस प्रकार इस समझौते में **प्रत्येक देश के कल्याण** को ध्यान में रखा गया था।
- **ओजोन परत को नुकसान पहुंचाने वाले पदार्थों से संबंधित मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल:** 1987 के मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल का उद्देश्य **ओजोन परत को नुकसान पहुंचाने वाले पदार्थों** (Ozone-depleting substances: ODS) **के उत्पादन और उपयोग को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करना** है।
  - हाल के वर्षों में ओजोन छिद्र के आकार में कमी आई है, इस प्रकार मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल **ओजोन परत का संरक्षण करने में अत्यधिक सफल** रहा है।
- **वैश्विक पोलियो उन्मूलन पहल** (Global Polio Eradication Initiative): इसे 1988 में शुरू किया गया था। इसके कारण वैश्विक स्तर पर पोलियो उन्मूलन की दिशा में काफी प्रगति हुई है।
- **संधारणीय ऊर्जा पहल** (Sustainable Energy Initiatives): नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का विस्तार किया गया है और संधारणीय ऊर्जा प्रणालियों को बढ़ावा दिया गया है। यह GPG की आपूर्ति के मामले में एक सफल प्रयास को दर्शाता है।
  - कई पहलें नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग को प्रोत्साहित करने और इस क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इसमें अंतर्राष्ट्रीय नवीकरणीय ऊर्जा एजेंसी (IRENA), 21वीं सदी के लिए नवीकरणीय ऊर्जा नीति नेटवर्क (REN21) जैसी पहलें शामिल हैं।

बॉक्स 3.1. GPGs उपलब्ध कराने के लिए राष्ट्रीय प्रयासः भारत इसमें एक अग्रणी भूमिका निभा रहा है

भारत **वसुधैव कुटुम्बकम** (विश्व एक परिवार है) दर्शन का पालन करता है। यह हमारी साझी मानवता, हमारे साझे विकास लक्ष्यों में एकता की भावना पैदा करता है। इसके अलावा, यह नियम–आधारित विश्व व्यवस्था तथा अंतर्राष्ट्रीय शांति हेतु हमारे साझे प्रयासों में भी एकता लाता है। इस प्रकार, GPGs **उपलब्ध कराने में भारत के प्रयास** महत्वपूर्ण हैं।

- **डिजिटल पब्लिक गुड्सः** भारत अपनी इंडिया स्टैक के साथ **डिजिटल पब्लिक गुड्स के मामले में अग्रणी** बन रहा है। इसमें पहचान (आधार), भुगतान (UPI) और डेपा (Data Empowerment and Protection Architecture: DEPA) लेयर्स शामिल हैं।
  - भारत अपने क्षेत्रीय और द्विपक्षीय भागीदारों के साथ–साथ वैश्विक आबादी को इंडिया स्टैक प्रदान कर रहा है।
- **लोक स्वास्थ्यः** अपनी G20 अध्यक्षता के तहत, भारत ने **वैश्विक लोक स्वास्थ्य प्रदान करने हेतु अलग–अलग प्राथमिकता वाले क्षेत्रों की पहचान** की है। इन क्षेत्रों में वन हेल्थ, एंटी–माइक्रोबियल रेजिस्टेंस (AMR), स्वास्थ्य महामारी कार्रवाई आदि शामिल हैं।
- **विश्व की फार्मेसीः** कोविड–19 महामारी के दौरान, **वैश्विक जेनेरिक (कम लागत वाली) फार्मास्युटिकल विनिर्माण केंद्र** के रूप में भारत की साख मजबूत हुई है।
  - **वैक्सीन मैत्री पहल** के तहत, भारत ने लगभग 100 देशों को 250 मिलियन से अधिक कोविड–19 टीकों की आपूर्ति की है।
- **संधारणीय जीवन शैलीः** भारत **मिशन LiFE जैसी पहलों के तहत अपने प्रकृति–आधारित दर्शन को बढ़ावा** दे रहा है। **उदाहरण के लिए–** मिशन LiFE व्यक्तिगत प्रयासों की सहायता से **संधारणीय जीवन शैली** को अपनाने और जलवायु परिवर्तन से निपटने का मार्ग प्रशस्त करता है।
- **आघातों को सहने में सक्षम आपूर्ति श्रृंखला** (Supply Chain Resilience)**:** भारत **वैश्विक या क्षेत्रीय आपूर्ति श्रृंखला संरचना को बनाए रखने** में समान विचारधारा वाले देशों के साथ भागीदारी कर रहा है। यह भागीदारी **सप्लाई चेन रेसिलिएंस इनिशिएटिव (SCRI) की सहायता** से की जा रही है। इससे महत्वपूर्ण पब्लिक गुड्स की उपलब्धता सुनिश्चित होगी।
- **क्षेत्रीय सुरक्षाः** भारत, हिंद महासागर क्षेत्र में अपने **महत्वपूर्ण हितों की सुरक्षा करने के लिए अलग–अलग सुरक्षा तंत्र उपलब्ध** करा रहा है। इस प्रकार क्षेत्र में शांति और सुरक्षा सुनिश्चित की जा रही है।
- **आपदा प्रबंधनः** भारत के **आपदा शमन और अनुकूलन संबंधी उपाय** क्षेत्रीय देशों को अग्रिम चेतावनी प्रणाली, मानवीय सहायता, आपदा प्रतिरोधी अवसंरचना गठबंधन (CDRI) जैसी प्रणालियों की सहायता से लाभान्वित कर रहे हैं।

4. हम GPGs की आपूर्ति कैसे बढ़ा सकते हैं?

मौजूदा दौर में तेजी से बदलती दुनिया की बढ़ती मांगों और आधुनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए GPGs की आपूर्ति एवं उपलब्धता को बढ़ाना अनिवार्य हो गया है।

- **ग्लोबल गवर्नेंस फ्रेमवर्कः** विभिन्न देशों के मध्य समन्वय स्थापित करने एवं वैश्विक संस्थानों को न्यायसंगत और समावेशी निर्णय लेने हेतु **व्यापक गवर्नेंस फ्रेमवर्क तैयार करने** की आवश्यकता है।
  - इस तरह के फ्रेमवर्क से सुनिश्चित किया जाएगा–
    - जोखिमों का प्रबंधन, बेहतर डेटा,
    - भविष्य के जोखिमों की पहचान और उनका अनुमान, तथा
    - तैयारियों एवं सुविधा प्रदान करने हेतु उचित वित्त–पोषण के लिए **बेहतर साधन।**
- **मांग और जागरूकता में वृद्धिः** वर्तमान समय में पब्लिक गुड्स उपलब्ध कराने वाली कई संस्थाओं की स्थापना भी किसी–न–किसी प्रकार की मांग के परिणामस्वरूप ही हुई है। उदाहरण के लिए- IMF की स्थापना वैश्विक महामंदी और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की गई थी, क्योंकि देशों ने माना था कि वैश्विक वित्तीय स्थिरता को बढ़ावा देना काफी महत्वपूर्ण है।
  - **प्रत्येक नए संकट के साथ GPGs का महत्त्व और अधिक बढ़ता जाता है, जैसे.**
    - **कोविड–19** के कारण वैश्विक लोक स्वास्थ्य को बढ़ावा,
    - वैश्विक शांति के लिए शरणार्थी संकट का समाधान, और
    - वैश्विक पर्यावरण को स्वच्छ बनाए रखने के लिए जलवायु परिवर्तन को रोकने की आवश्यकता।
- **वार्ता और समझौताः अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, सभी देशों** को राष्ट्र हित में **कुछ अल्पकालिक समझौते करने और आवश्यक संयम बरतने** की आवश्यकता है। इससे दीर्घकालिक हित और लाभ प्राप्त किए जा सकते हैं, जो केवल अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से ही प्राप्त हो सकते हैं।

- **निजी क्षेत्रक और नागरिक समाज को शामिल करना:** सीमा पार संपर्क को आकार देने और सार्वजनिक वस्तुओं के वैश्विक विस्तार को साकार करने में इनकी भूमिका तेजी से बढ़ती जा रही है।
- **बहुपक्षवाद को सक्रिय करना:** GPGs की उपलब्धता **"व्यापक नेटवर्क आधारित, अधिक समावेशी और अधिक प्रभावी पुनर्जागृत बहुपक्षवाद"** की सहायता से ही सुनिश्चित की जा सकती है। इसमें निम्नलिखित चार विशेषताओं का होना आवश्यक है:
  - अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और संप्रभुता को बनाए रखते हुए, **पारस्परिक अनुकूलता को बढ़ावा देने का सिद्धांत;**
  - **GPGs को एक नई, विशिष्ट प्रकार की सार्वजनिक नीति संबंधी चुनौती के रूप में मान्यता देना।** वर्तमान में उनके विकास में सहायता के साथ उनकी मौजूदा समस्याओं को समाप्त करना;
  - GPG-संबंधी चुनौतियों के समाधान के लिए एक **मिशन–उन्मुख दृष्टिकोण अपनाना**; और
  - 'वैश्विक' और 'व्यक्तिगत' के बीच **मध्यस्थों के रूप में क्षेत्रीय संगठनों की बढ़ती संख्या का एकीकरण करना।**

नेटवर्क से जुड़े – समावेशी – प्रभावी बहुपक्षीयता के लिए मानदंड

निष्कर्ष

ग्लोबल कॉमन्स और ग्लोबल पब्लिक गुड्स के शासन में सुधार से संबंधित किसी भी वार्ता में यह आकलन करना चाहिए कि हमारी मौजूदा व्यवस्थाएं इन मानदंडों को कितनी दक्षता से पूरा करती हैं। जहां वे ऐसा नहीं करती हैं, वहां बेहतर तैयारी, प्राथमिकता, निर्णय लेने की व्यवस्था, संसाधन, जवाबदेही और अनुपालन के विकल्पों पर विचार करने की आवश्यकता है। विशेष रूप से, स्वैच्छिक और बाध्यकारी कार्यों के बीच संतुलन स्थापित करने की आवश्यकता है जो हमारे सामने आने वाली चुनौतियों के अनुरूप हों।

टॉपिक – एक नज़र में

ग्लोबल पब्लिक गुड्स (GPGs)

दरअसल ग्लोबल पब्लिक गुड्स ऐसे पब्लिक गुड्स को कहा जाता है जिनका **दायरा वैश्विक हो।** ऐसी वस्तुएं गैर–अपवर्जनीय और गैर–प्रतिस्पर्धी होती हैं। उदाहरण के लिए– स्वच्छ प्राकृतिक पर्यावरण, वैश्विक स्वास्थ्य एवं शांति आदि।

GPGs का महत्त्व

- सीमा–पार महामारी और आतंकवाद जैसे सुरक्षा जोखिमों की **साझा चुनौतियों का समाधान** करना।
- जलवायु परिवर्तन जैसे **असमान रूप से फैले वैश्विक जोखिमों का प्रबंधन करना।** साथ ही, वैश्विक कार्बन ट्रेडिंग प्रणालियों जैसे लाभकारी अवसरों का लाभ उठाना।
- विश्व के विभिन्न देशों में और देश के भीतर **गरीबी और असमानता में कमी लाना।**
- GPGs में **निवेश** करने से **निरंतर लाभांश प्राप्त होता है।**

GPGs की आपूर्ति कम होने के पीछे उत्तरदायी कारक

- **सामान्य चुनौतियां,** जैसे–प्रोत्साहन का अभाव, फ्री राइडर समस्या, लाभ प्राप्ति में विलंब और नकारात्मक बाह्यताएँ।
- विभिन्न राष्ट्रों और उनकी आबादी के बीच **समन्वय का अभाव।**
- राष्ट्रीय सरकारों की **प्राथमिकताएं, वरीयताएं और हित अलग–अलग होते हैं।**
- **सबसे कमजोर कड़ी की समस्या,** क्योंकि एक भी गैर–अनुपालन कार्य विफलता के जोखिम को बढ़ा देता है।
- विनियमों को लागू करने के लिए **कानूनी प्राधिकार का अभाव।**
- **बहुपक्षवाद से जुड़ी चिंताएं,** जैसे– वित्तीय संसाधनों का सही तरीके से उपयोग न करना, भू–राजनीतिक शक्ति की विभिन्न स्थितियां आदि।

GPGs की सुविधा प्रदान करने के लिए सफल रहे कुछ तरीके

- जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिए **पेरिस समझौता।**
- ओजोन क्षयकारी पदार्थों को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने के लिए **मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल।**
- वैश्विक **पोलियो उन्मूलन** पहल।
- **संधारणीय ऊर्जा पहल,** जैसे–IRENA, REN21 आदि।

GPGs की सुविधा में वृद्धि करने के लिए भारत द्वारा किए गए प्रयास

- भारत, इंडिया स्टैक के साथ **डिजिटल पब्लिक गुड्स** में सबसे अग्रणी देश है।
- भारत की G20 अध्यक्षता के तहत **वैश्विक सार्वजनिक स्वास्थ्य** प्राथमिकता वाला क्षेत्र है।
- भारत वैक्सीन उत्पादन में अग्रणी देश होने के साथ–साथ **विश्व की फार्मेसी है।**
- मिशन LiFE की सहायता से **संधारणीय जीवन–शैली** को अपनाने को प्रोत्साहित करना।
- हिंद महासागर क्षेत्र में **निवल सुरक्षा प्रदाता** (Net security provider) है।
- **आपदा शमन और अनुकूलन संबंधी उपायों** से पड़ोसी देशों को लाभ पहुंचाना।

GPGs की आपूर्ति को बढ़ाने के तरीके

- निर्णय लेने में सुधार के लिए **व्यापक वैश्विक प्रशासनिक संरचनाओं की स्थापना करना।**
- GPGs के संबंध में **मांग और जागरूकता को बढ़ाना।**
- दीर्घकालिक लक्ष्यों को पूरा करने के लिए विभिन्न राष्ट्रों के बीच **वार्ता और समझौते करना।**
- **निजी क्षेत्रक और नागरिक समाज से मदद** लेना।
- अधिक नेटवर्क से जुड़े, अधिक समावेशी और **अधिक प्रभावी ढंग से पुनर्जीवित बहुपक्षवाद** को बढ़ावा देना।

बॉक्स और तालिकाएं

बॉक्स 1.1. ग्लोबल कॉमन्स और ग्लोबल पब्लिक गुड्स ---------- 2
बॉक्स 2.1. GPGs की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए मौजूदा बहुपक्षवाद में सुधार की आवश्यकता क्यों है? ---------- 4
बॉक्स 2.2. एक छोटी सी वार्ता! कोविड–19 और ग्लोबल पब्लिक गुड्स (GPGs) की भूमिका ---------- 5
बॉक्स 3.1. GPGs उपलब्ध कराने के लिए राष्ट्रीय प्रयासः भारत इसमें एक अग्रणी भूमिका निभा रहा है ---------- 6

Ishita Kishore

Garima Lohia

Uma Harathi N
39 in Top 50 Selection in CSE 2022

8 in Top 10 Selection in CSE 2021

ANKITA AGARWAL

GAMINI SINGLA

AISHWARYA VERMA

UTKARSH DWIVEDI

YAKSH CHAUDHARY

SAMYAK S JAIN

ISHITA RATHI

PREETAM KUMAR

DELHI
HEAD OFFICE
Apsara Arcade, 1/8-B, 1 Floor,Near Gate 6, Karol Bagh Metro Station

Mukherjee Nagar Centre
635, Opp. Signature View Apartments, Banda Bahadur Marg, Mukherjee Nagar

For Detailed Enquiry,
Please Call: +91 8468022022, +91 9019066066

SHUBHAM KUMAR
CIVIL SERVICES EXAMINATION 2020

ENQUIRY@VISIONIAS.IN /VISION_IAS WWW.VISIONIAS.IN /C/VISIONIASDELHI VISION_IAS /VISIONIAS_UPSC

अहमदाबाद भोपाल चंडीगढ़ गुवाहाटी हैदराबाद जयपुर जोधपुर लखनऊ प्रयागराज पुणे राँची सीकर